• काम की बात...

पूजा घर में दिया

हिंदू धर्म में दिया जलाने का बहुत महत्व है। हर घर में सुबह शाम पूजा घर में दिया जलाने की परंपरा है। इसके साथ ही तुलसी के चौरे पर और घर के दरवाजे पर भी दिया जलाना शुभ माना जाता है। मानयता है कि दिया जलाना बहुत शुभ है और इससे धन की देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और उनकी कृपा से घर में सुख-समृद्धि बढ़ती है. दिया जलाने से नकारात्मकता भी दूर होती है। हालांकि दिए को सही तरीके से जलाना जरूरी होता है और इसके कुछ नियम भी होते हैं

▶ दिया जलाते समय उसकी सही दिशा का ध्यान रखना चाहिए। दिया की गलत दिशा लाभ की जगह नुकसान पहुंचा सकता है। मंदिर के पास दिया हमेशा पश्चिम दिशा की ओर रखना चाहिए। इस दिशा में रखा जलता दिया

पोजिटिव एनर्जी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

▶ अगर आप जलते दिए को भगवान के सामने रख रहे हैं तो इन बातों का ध्यान रखें। भगवान के दाहिने हाथ की ओर हमेशा घी का दिया रखें और बाए हाथ के तरफ तेल का दिया रखें।

▶ भगवान को दिखाने वाले दिए में हमेशा रूई की बाती लगानी चाहिए। रूई की बाती को शुभ माना जाता है. बाती को भूलकर भी दक्षिण दिशा की ओर नहीं लगाना चाहिए।

▶ हमेशा अंखडित दिया ही जलाना चाहिए। टूटा दिया शुभ नहीं माना जाता है। दिया में इतना घी जरूर डालें कि पूजा के दौरान न बुझे। पूजा के बीच में दिया का बुझना शुभ नहीं माना जाता है। एक दिए से दूसरा दिया नहीं जलाना चाहिए।

▶ सुबह शाम जलाए जाने वाले दिए के लिए समय का बहुत महत्व होता है. सुबह जहां 5 बजे से लेकर 10 बजे तक दिया जलाना शुभ माना गया है वहीं शाम को गोधूलि बेला में 5 बजे से लेकर 7 बजे तक का दिया जलाने से सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

• पूजा...

तुलसी विवाह

सनातन धर्म में तुलसी के पौधे को वृंदा के नाम से पूजा जाता है। हर साल कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि के दिन तुलसी विवाह करवाया जाता है। इस दिन तुलसी के पौधे को दुल्हन की तरह सजा कर उसकी पूजा की जाती है और भगवान विष्णु के स्वरूप शालिग्राम से उसका विवाह करवाया जाता है। कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी में प्रदोष काल यानी सायंकाल में तुलसी विवाह करवाया जाता है। मान्यता है कि तुलसी विवाह करने से परिवार में सुख शांति आती है और दांपत्य जीवन सुखमय होता है। खासतौर पर उन लोगों के लिए ये बहुत शुभ है जिनका विवाह किन्हीं कारणों से लंबे समय से नहीं हो पा रहा है। चलिए जानते हैं कि इस साल तुलसी विवाह कब है और इसके दौरान कौन कौन से योग लग रहे हैं।

▶▶ कब है तुलसी विवाह -इस साल यानी 2024 में तुलसी विवाह 12 नवंबर को देवोत्थान एकादशी के दिन करवाया जाएगा.द्वादशी तिथि 12 नवंबर को सायंकाल में 4 बजकर 4 मिनट पर आरंभ हो रही है और इसका समापन अगले दिन यानी 13 नवंबर को 1 बजकर 1 मिनट पर हो रहा है। चूंकि तुलसी विवाह प्रदोष काल में करवाया जाता है और प्रदोष काल 12 नवंबर को पड़ रहा है, इसलिए तुलसी विवाह 12 नवंबर को ही कराया जाएगा। इसी दिन सुबह के समय एकादशी भी रहेगी. 12 नवंबर को शाम 5 बजकर 29 मिनट से रात को 7 बजकर 53 मिनट तक प्रदोष काल है और इस दौरान तुलसी विवाह करवाया जा सकता है।

▶▶ बन रहे हैं अद्भुत संयोग -इस साल तुलसी विवाह पर कई अद्भुत संयोग बन रहे हैं। तुलसी विवाह के दिन सुबह 7 बजकर 52 मिनट से सर्वार्थ सिद्धि योग लग रहा है। ये योग अगले दिन 5. 40 मिनट तक रहेगा। इसके साथ साथ रवि योग भी लग रहा है जो मांगलिक कामकाज के लिए उत्तम माना जाता है। इस दिन हर्षण योग और वज्र योग भी लग रहा है. आपको बता दें कि इस दिन पूरे रीति रिवाज से तुलसी मां और शालिग्राम स्वरूप का विवाह करवाया जाता है। इस दिन तुलसी के पत्तों को पूजा में जरूर शामिल किया जाता है।

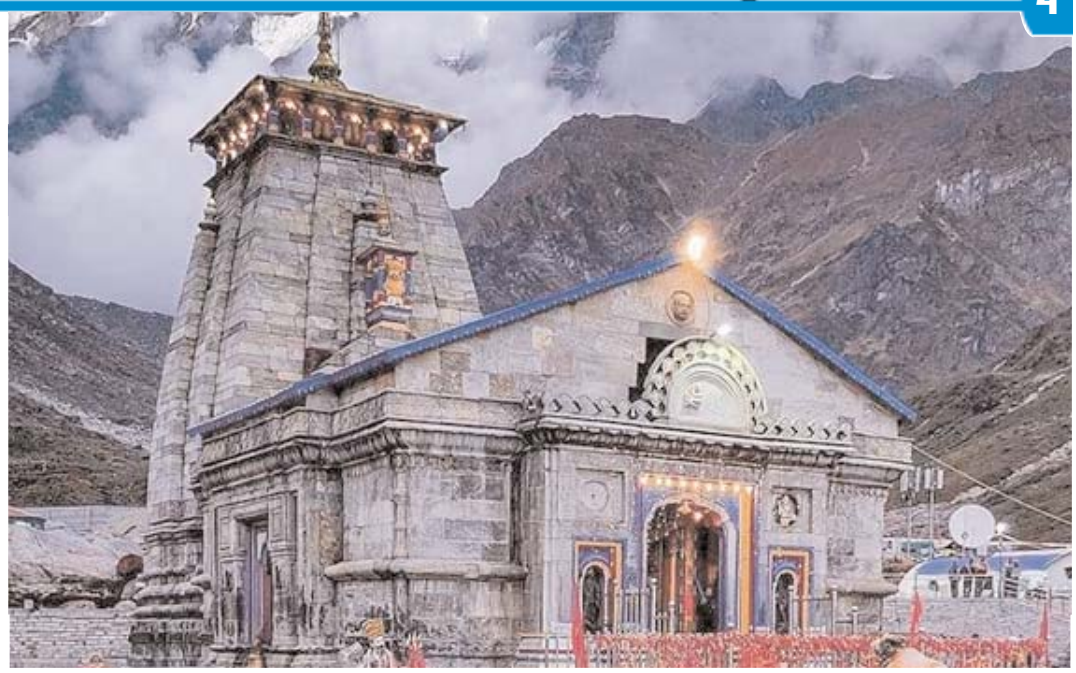

८५८०६०१८

२७यह मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में स्थित है। इस मंदिर को चार धाम में गिना जाता है। इसके अलावा यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

उत्तराखंड में केदारनाथ और बद्रीनाथ ये दो प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। केदारनाथ मंदिर के संबंध में कहा जाता है कि जो बिना केदारनाथ के दर्शन किए बद्रीनाथ की यात्रा करता है, उसकी यात्रा सफल नहीं होती...

भगवान शिव के मंदिर

भारत में भगवान शिव के कई मंदिर मौजूद हैं। उनमें से कुछ मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में शामिल हैं। माना जाता है भगवान शिव के इन मंदिरों के दर्शन से प्रभु की कृपा प्राप्त होती है। इसके अलावा यह भी कहा जाता है कि इन मंदिरों के दर्शन से मनोकामनाएं भी पूरी होती हैं। आइए जानते हैं भगवान शिव के ऐसे 5 मंदिरों के बारे में जो अत्यधिक प्रसिद्ध हैं और जहां भक्त अक्सर जाना पसंद करते हैं।

● **केदारनाथ मंदिर** -यह मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में स्थित है। इस मंदिर को चार धाम में गिना जाता है। इसके अलावा यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। उत्तराखंड में केदारनाथ और बद्रीनाथ ये दो प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। केदारनाथ मंदिर के संबंध में कहा जाता है कि जो बिना केदारनाथ के दर्शन किए बद्रीनाथ की यात्रा करता है, उसकी यात्रा सफल नहीं होती।

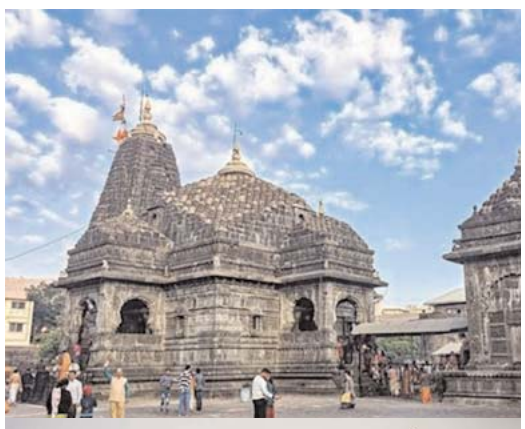

● **सोमनाथ मंदिर**- सोमनाथ का मंदिर गुजरात राज्य के काठियावाड़ क्षेत्र में समुद्र के किनारे स्थित है। इस मंदिर को भी 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है. कहा जाता है कि इस मंदिर की महिमा का वर्णन महाभारत, गीता, और स्कंद पुराण में भी है। मान्यता ये भी है कि चंद्र देव ने शिव को अपना नाथ मानकर यहां तपस्या की थी। इस कारण इस मंदिर का नाम सोमनाथ मंदिर पड़ा।

● **त्रयंबकेश्वर मंदिर**-त्रयंबकेश्वर मंदिर महाराष्ट्र में गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित है। माना जाता है कि यह मंदिर हिंदुओं की आस्था का बड़ा केंद्र है। इस मंदिर का निर्माण काले पत्थरों से किया गया है। मान्यता है कि शिव का कोई भक्त यहां से खाली नहीं लौटता है।

● **दक्षेश्वर शिव मंदिर** -दक्षेश्वर शिव मंदिर उत्तराखंड राज्य के हरिद्वार में स्थित है। मान्यता है कि इस मंदिर में मौजूद शिवलिंग का अभिषेक करने से कई गुना अधिक लाभ मिलता है।

● **अमरनाथ मंदिर**- अमरनाथ मंदिर जम्मू-कश्मीर राज्य में स्थित है। कहा जाता है कि इस मंदिर में दर्शन करना अत्यंत पुण्यदायी है। यह मंदिर एक गुफा के रूप में है। पवित्र गुफा में बर्फ से लगभग 10 फीट ऊंचा प्राकृतिक शिवलिंग का निर्माण होता है जोकि प्रत्येक श्रद्धालु के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहता है। श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आषाढ़ पूर्णिमा से रक्षाबंधन तक आते हैं।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• महत्व...

तुलसी की माला

हिंदू धर्म में तुलसी का बहुत महत्व है। मान्यता है कि भगवान विष्णु को तुलसी इतनी प्रिय हैं कि वे बगैर तुलसी दल के भोग में ग्रहण नहीं करते हैं. यही नहीं तुलसी की माला का भी विशेष महत्व है। अधिकतर विष्णु भक्त तुलसी की माला धारण करते हैं। तुलसी की माला धारण करने वालों को श्मशान घाट पर जाना और अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होना चाहिए। अगर इन जगहों पर जाना पड़े तो तुलसी की माला को पहले उतारकर गंगा जल में डुबोकर रखना चाहिए। वापस आने के बाद शुद्धता से नाखून काटने और बाल धोकर नहाने के बाद धारण करना चाहिए। तुलसी की माला पहनने वाले लोगों को तामसिक भोजन की मनाही होती है। इससे तुलसी का अपमान होता है। तुलसी की माला पहनने के बाद हमेशा सात्विक भोजन ही करना चाहिए। उन्हें मांस मदिरा से लेकर प्याज लहसुन नहीं खाना चाहिए। ऐसे लोगों को सिगरेट या धूम्रपान की दूसरी आदतों से भी दूर रहना चाहिए।

• प्रदोष व्रत...

प्रदोष व्रत के दिन सुबह स्नान करके साफ सुथरे कपड़े पहनें और मन को शांत रखें। फिर पूजा स्थल पर शिवलिंग की स्थापना करें और व्रत का संकल्प लें। इसके बाद शिवलिंग का अभिषेक पंचामृत से करें। पंचामृत में दूध, दही, घी, शहद और गंगा जल शामिल करें। शिवलिंग पर बेलपत्र, धतूरा और सफेद फूल अर्पित करें। पूजा के समय धूप-दीप जलाकर भगवान शिव की पूजा करें। फिर ऊं नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जाप करें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित